**Indian J. Soc. & Pol. 07 (02) : 87-90 : 2020** **ISSN: 2348-0084 ( PRINT )**
**31 July 2020** **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

# आम चुनाव 2019 : अभिजन संस्कृति का विचलन और जन संस्कृति का उभार

**धर्मेन्द्र प्रताप श्रीवास्तव**[1]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, श्री म0रा0दा0स्ना0महा0भुड़कुड़ा गाजीपुर, उ0प्र0 भारत

## ABSTRACT

***आम चुनाव 2019 बहुत कुछ मायनों में भारतीय लोकत्ांत्रिक संस्कृति के लिए अद्भुत, अविस्मरणीय और अकल्पनीय रहा। कभी दो सांसदों वाली पार्टी आज दोबारा पुर्ण बहुमत के साथ सत्ताशीन हुई। 'मोदी है तो मुमकिन है' के नारे ने चौकीदार को देश की रखवाली का दायित्व सौंपा । पहली बार कश्मीर से कन्याकुमारी तक और कामाख्या से सोमनाथ तक नक्शे का रंग केसरिया है, देश के 18 राज्यों से देश के सबसे पुराने दल का खाता तक नहीं खुला, आठ से अधिक राज्यों में पूर्व मुख्यमंत्री चुनाव हार गये, देश की जनता ने गुना जैसी परंपरागत सीटों पर विरासत की राजनीति को नकार दिया और तो और तुरूप का इक्का भी अमेठी को स्मृति के हाथों में जाने से नहीं रोक पाया, कभी निर्विरोध संसद में पहुचने वाली 'बहूजी' को जनता ने घर का रास्ता दिखा दिया और जिस परिवार में कांग्रेस का नेतृत्व 1919 में प्राप्त हुआ था ठीक सौ साल बाद 2019 में उसी परिवार की परंपरागत सीट पर राहुल गांधी की हार ने लोकतंत्र के एक नये अध्याय की शुरूआत कर दी। यह परिवर्तन एक सहज मन के लिए के लिए किसी राजनैतिक व्यक्तित्व के करिश्माई व्यक्तित्व के प्रदर्शन का परिणाम हो सकता है किन्तु एक राजनीति शास्त्र का अध्येता इस परिवर्तन को व्यक्ति की उन मूल्यो, विश्वासों, अभिरूचियों तथा अभिवृत्तियों के परिवर्तन के रूप में ही देखेगा जिसे राजनीतिशास्त्रीय वांगमय में राजनीतिक संस्कृति का नाम दिया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में आम चुनाव 2019 के राजनीतिक संस्कृति दृष्टिकोण से विश्लेषण का प्रयास किया गया है। शोध पत्र में भारत के सन्दर्भ में माइरान वीनर की इस सैद्धान्तिक संकल्पना को आधार माना गया है कि भारत में दो प्रकार की राजनीतिक संस्कृति पायी जाती है। 'अभिजन राजनीतिक संस्कृति' तथा 'जन राजनीतिक संस्कृति'। प्रस्तुत शोध पत्र में आम चुनाव 2019 के माध्यम से दोनो ही संस्कृतियों को समझने का प्रयास किया गया है।***

***KEYWORDS:*** *लोकतंत्र, राजनीतिक संस्कृति, अभिजन संस्कृति, लोक संस्कृति*

### भारत में जन संस्कृति

सात चरणों के लम्बे चुनाव कार्यक्रम के बाद 23 मई की तिथि पर पूरे विश्व की निगाहें टिकी हुई थीं। चुनाव पूर्व सर्वेक्षणों के अनुमान आगामी चुनाव परिणामों की ओर संकेत तो कर रहे थे फिरभी राजनीतिक पण्डित इस प्रकार के परिणामों पर यकीन करने को तैयार नहीं थे । गणना की तिथि के पहले दो घण्टों के रूझानों ने ही स्पष्ट कर दिया था कि भारत एक बार पुनः भगवा होने जा रहा है। शाम होते होते भारतीय लोकतंत्र ने अपनी खूबसूरती साबित कर दी। मैं नरेन्द्र दामोदर दास मोदी.....फिजां में गूंजती हुई यह आवाज, विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र में हुए महान परिवर्तन का साक्षी बनी। साक्षी इस बात का भी कि जनभावनाओं पर किसी की ठेकेदारी नहीं चलती और भारत की जन संस्कृति, भारत के अभिजन संस्कृति से कहीं अधिक पुष्ट है। प्रस्तुत शोध पत्र में जन संस्कृति के परिवर्त्य के रूप में मतदान प्रतिशत, व्यवस्था पर लोगों की विश्वसनीयता, महिला सहभागिता, रिकार्ड संख्या (267) में नये लोक संभा सदस्यों का निर्वाचित होना, पहली बार लोक सभा में सर्वाधिक महिला सांसदों 78 का प्रवेश जिनमें 46 पहली बार चुनकर आयी है, माना गया है।

### व्यवस्था के प्रति लोगों का स्पष्ट दृष्टिकोण

पिछले साल के अंत में राजस्थान में हुए चुनावों में राजस्थान की जनता ने एक नारा लगाया था ''रानी तेरी खैर नहीं, मोदी जी से बैर नहीं''इस नारे ने देश में होने वाले आम चुनावों की पटकथा लिख दी थी और आगाह कर दिया था कि भारतीय संघीय व्यवस्था में केन्द्र और राज्यों के चुनाव अलग अलग मुद्दों पर ही लड़े जायेंगे। उड़ीसा तेलंगाना और सिक्किम में हुए विधान सभा के चुनावों ने भी यह सिद्ध कर दिया है कि राज्यों में चाहे जो स्थिति बने राष्ट्रीय फलक पर चाय वाले का कोई विकल्प नहीं। देश एक नयी सरकार ही नहीं वरन् नये तरह की सरकार देखने को आतुर है ढेर सारी आशाओं, अपेक्षाओं और प्रत्याशाओं के बीच नये सरकार का राज्यारोहण देश की तकदीर और तस्बीर में कौन सा रंग भरता है यह तो भविष्य में विश्लेषण का विषय होगा फिलहाल राजनीतिशास्त्र के अध्येता के रूप में यह जिम्मेदारी बनती है सम्पन्न चुनाव की प्रक्रिया पर एक निष्पक्ष दृष्टि डाली जाय।

### मतदान का सर्वाधिक प्रतिशत

बहुत सारे मायनों में आम चुनाव ऐतिहासिक दृष्टि से भारत में हुए आम चुनावों से भिन्न रहा है। इस चुनाव में मतदान का प्रतिशत 67.40 रहा जिसमें पुरूषों का मतदान प्रतिशत 67.72 प्रतिशत तथा महिलाओं का मतदान प्रतिशत 67.18 प्रतिशत रहा जो कि 1952 से आज तक हुए चुनावों में सर्वाधिक है। 1952 में 61.16 प्रतिशत, 1957 में 63.73 प्रतिशत, 1962 में 55.42 प्रतिशत, 1967 में 61.33 प्रतिशत,1971 में 55.27 प्रतिशत, 1977 में 60.49 प्रतिशत, 1980 में 56.92 प्रतिशत,1984–85 में 64.01 प्रतिशत, 1989 में 61.95 प्रतिशत, 1991–92 में 55.88 प्रतिशत, 1996 में 57.94 प्रतिशत, 1998 में 61.97 प्रतिशत, 1999 में 59.99 प्रतिशत, 2004 में 58.07 प्रतिशत 2009 में 58.21 प्रतिशत, 2014 में 66.40 प्रतिशत मतदान रिकार्ड

***1: Corresponding Author***

किया गया था। भारत में हुए अब तक के आम चुनावों में ऐसा पहली

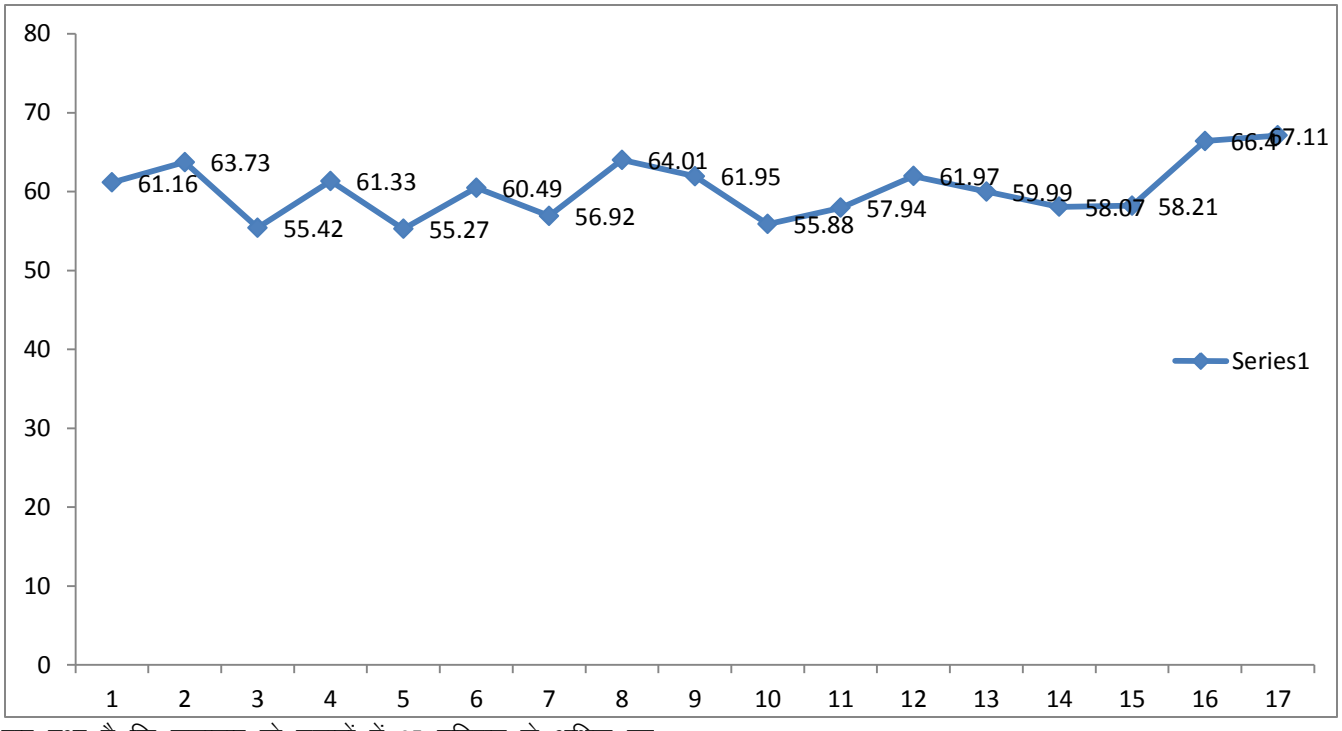


बार हुआ है कि लगातार दो चुनावों में 65 प्रतिशत से अधिक का मतदान हुआ है।

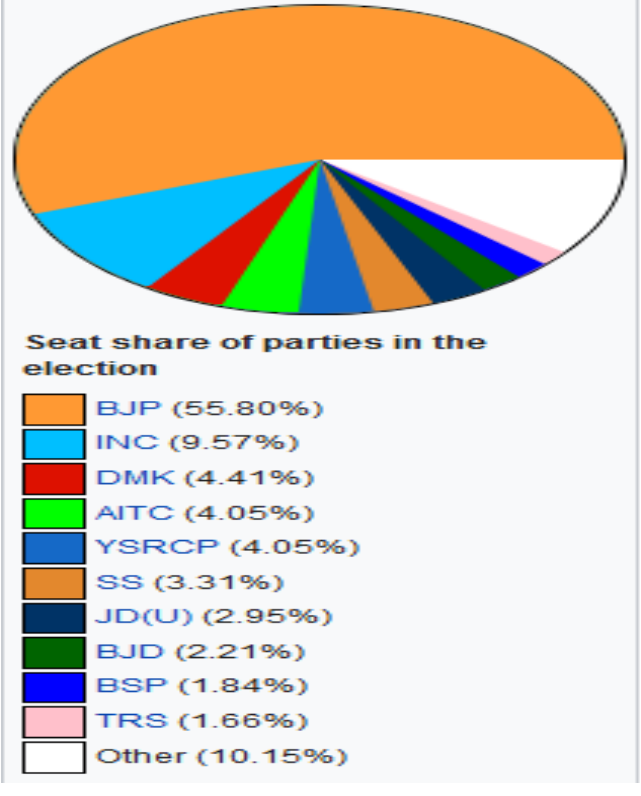


Source : eci.gov.in

## महिलाओं के मत प्रतिशत में सकारात्मक परिवर्तन

परंपरागत रूप से भारत एक ऐसा राष्ट्र रहा है जहां नारी शक्ति का स्वरूप रही है इस रूप में वह पूजनीय भी किन्तु सत्ता पर पुरूष अपना स्वाभाविक आधिपत्य मानता रहा है। यद्यपि पूर्व के चुनावों में भी महिलायें चुनावों में मतदान करती रही हैं किन्तु उनका मत प्रतिशत पुरूषों की अपेक्षा हमेशा ही कम रहा है। 2019 के आम चुनावों ने महिला सहभागिता की नयी इबारत लिखी है जबकि महिला मतदाताओं का मत प्रतिशत पुरूषों के मत प्रतिशत के लगभग बराबर है।

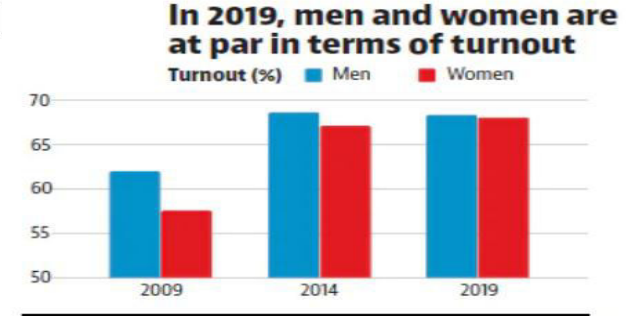


## लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति आस्था

इस चुनाव में देश व विश्व, अभिजन संस्कृति के विकृत रूप और जन संस्कृति के सर्वोत्कृष्ट स्वरूप का साक्षी हुआ है। लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के प्रति जहां अविश्वास का सार्वजनिक प्रदर्शन किया गया भारत के सम्पूर्ण निर्वाचन प्रक्रिया पर सवाल

उठाये गये । वहीं भारत की 130 करोड़ की जनता ने यह साबित किया है कि लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति उसकी आस्था असंदिग्ध है।

## मतों की ठेकेदारी को ठेंगा

भारत में निर्वाचन प्रक्रिया के प्रारंभ के समय से ही कुछ दल अपने आप को मतों के ठेकेदार समझते रहे हैं जिसे मतदाताओं ने अपने आचरण में सत्य भी सिद्ध किया है। स्वतंत्रता पूर्व भी मुस्लिम लीग मुस्लिम मतदाताओं के ठेकेदार के रूप में सामने आयी थी । विगत कुछ चुनावों में भी कुछ दलों ने स्वयं को कुछ जातियों के मतदाओं का ठेकेदार समझ लिया था जब वे कोई गठबंधन ये समझौता किन्ही अन्य दलों से करते थे तो उनकों लगता था कि उनके जेब के मतों को अपने मन माफिक अन्तरित कर लिया जायेगा। कुछ इन्ही मनोभावों पर आधारित सपा बसपा जैसे अनैतिक गठवंधन इस आम चुनाव में भी देखने को मिले जिन्हे अपेक्षा थी कि वे अपने अपने मतों को अन्तरित कर अपने प्रत्योशियों को विजयी बना लेंगे। परन्तु निर्वाचन परिणामों ने यह सिद्ध कर दिया कि भारत के मतदाताओं की सोच, राजनीति के प्रति उनकी अभिवृत्ति अब परिवर्तित हो गयी है, अब भारतीय मतदाताओं पर किसी की ठेकेदारी नहीं चलने वाली। यह समृद्ध राजनीतिक संस्कृति का परिचायक माना जा सकता है।

## विश्वसनीय संवाद को स्वीकृति

पूरे चुनाव का इस प्रकार से व्यक्ति केन्द्रित होना पूरे विश्व के लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के लिए एक प्रतिमान स्थापित करता है कि लोकतंत्र में स्वीकृति के लिए लोक भावनाओं के अनुकूल और उनके सन्निकट होना कितना महत्वपूर्ण है। मोदी के इस स्वीकार्यता ने संवाद की प्रासंगिकता को भी स्थापित किया है कि जनता नोटवबंदी और जीएसटी जैसे कड़वे घूंटों को पीने को तैयार है यदि उसके साथ सामान्य संवाद स्थापित रखा जाय। विश्वास और विश्वसनीयता की नयी ईबारत लिखी है मोदी ने । 2000 की किसान निधि पर बड़े तबके का हर्षित होना और 72000 के प्रलोभन का ठुकरा देना यह साबित करता है कि राजनीतिक व्यवस्था में वही वादे चलेंगे जिनके पीछे विश्वसनीयता का मजबूत आधार होगा। राष्ट्रीय अस्मिता और राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति कोई भी आदर्शवादी दृष्टिकोण, भारत की सहिष्णु और उदारवादी जनता किसी भी कीमत पर स्वीकार करने को तैयार नहीं है। इस नाते ''हम वो हैं जो घर में घुस के मारना जानते हैं'' का मोदी का नारा खूब चला है।

ये पीढ़ी दावा करेगी कि हमने, गांधी को नहीं देखा जिन्होने जंगल की घास, समुद्र के खारे जल और चरखे को स्वतंत्रता आन्दोलन का हथियार बनाया था, हमने मोदी को देखा है जिन्होने हाथ के लोटे, सर की छत और घर के चूल्हे को दिल और चुनाव जीतने का हथियार बना डाला। हां, इस चुनाव ने दलीय संगठन की प्रासंगिकता को भी रेखांकित किया है। एक तरफ भारत की बहुत सारी पार्टियों के संगठन पर उत्तराधिकारियों का कब्जा है जिन्होने न तो कभी संगठन के लिए काम किया न ही निचले स्तर पर होने वाली कठिनाइयों का अनुभव किया वहीं मोदी के हनुमान के रूप में अमित शाह के सांगठनिक क्षमता, प्रतिबद्धता, परिश्रम और पराक्रम ने भारतीय लोकतंत्र में दलों को उत्तरजीविता के लिए संगठन पर काम करने का भी मानदण्ड स्थापित किया है।

## विरासत की राजनीति को नकार

2019 का आम चुनाव निश्चित रूप से प्रताप चन्द सारंगी जैसे लोगों के विजय के लिए याद किया जायेगा तो यह चुनाव इसलिए भी भारतीय लोकतांत्रिक संस्कृति के लिए मील का पत्थर सिद्ध होगा कि इसमें भारतीय जनमानस ने प्रजाभाविता का पूरी तरह से परित्याग कर दिया। विरासत पर राजनीति करने वाले बहुत सारे पुरोधा जनता द्वारा नकार दिये गये। गुना में ज्येतिरादित्य सिंधिया, अनंतनाग से महबुबा मुफती, हासन से पूर्व प्रधानमंत्री एच0डी0 देवगौड़ा स्वयं राहुल गांधी का हार जाना भारतीय जन संस्कृति के बहुत बड़े परिवर्तन का प्रमाण माना जा सकता है।

(https://akm-img-a-in.tosshub.com/indiatoday/images/bodyeditor/201905/mail_today-x875.jpg?Ed3HKaeebkQmDiinxoWGUusPq2wVE7MQ)

## भारत में अभिजन संस्कृति

इस तथ्य के बावजूद कि इस चुनाव ने भारतीय लोकतंत्र में आस्था को परिपुष्ट किया है प्रचण्ड बहुमत की सरकार के द्वारा विकास का उन्मुक्त उड़ान भरने का वातावरण प्रदान किया है विश्व समुदाय के सम्मुख अग्रिम पंक्ति का आत्मबल दिया है, चुनाव का यह कालखंड बहुत कुछ ऐसी परिस्थितियों की ओर ध्यानाकर्षित भी करता है जिसके कारण एक संवेदनशील भारतीय को चिंतित होना चाहिए। इस चुनाव ने भारत में अभिजन संस्कृति के जिस रूप का दर्शन कराया उससे निश्चित रूप से इसके क्षरण के रूप में देखा जायेगा।

## अवसरवादिता की पराकाष्ठा

चुनाव व चुनावपूर्व देश ने अवसरवादिता की पराकाष्ठा देखा है बेमेल और अवसरवादी गठवंधन, पार्टियों को छोड़ना और दूसरी पार्टियों से टिकट प्राप्त करने के लिए राजनैतिक विचारधारा

का परित्याग और नये विचारधारा को आत्मसात करने का खेल खूब चला है। कौन सोच सकता था कि उत्तर प्रदेश जैसे राज्य में दो धुर विरोधी राजनीतिक दल सपा और बसपा एक हो जायेंगे। बिहार जैसे राज्य में एक दूसरे के विरूद्ध लड़ने वाली पार्टियां महागठबंधन बनायेंगी। विकल्प की राजनीति के दावे के साथ प्रचण्ड बहुमत से दिल्ली में सरकार बनाने वाली आम आदमी पार्टी गठबंधन का कटोरा लेकर कांग्रेस के दरवाजे पर शीर्षासन करती हुई नजर आयेगी और लम्बे समय तक एन0डी0ए0 के साथ सत्तासुख लेने वाले नायडू सत्ता के लिए विपक्षी नेताओं को सहेजते हुए नजर आयेंगे। वास्तव में सत्ता के लिए नेताओं द्वारा खेला गया अनैतिक खेल अभिजन संस्कृति के विचलन का ही परिचायक हो सकता है।

## विकल्प का अभाव

दुनिया ने इस चुनाव को एक व्यक्ति के चुनाव के रूप में देखा है जहां पक्ष भी मोदी, विपक्ष भी मोदी, मुद्दा भी मोदी, विकल्प भी मोदी, आशंका का कारण भी मोदी और विश्वास का प्रतीक भी मोदी, तारीफ भी मोदी की, आलोचना भी मोदी की, पोस्टर पर भी मोदी, ईवीएम पर भी मोदी, पार्टियां, विचारधारा, सिद्धान्त, और नीतियां सब गौड़ बस प्रधानसेवक की प्रधानता। 130 करोड़ के इस देश में नेता के नाम पर बिकल्पो का इस प्रकार से सीमित हो जाना देश के लिए बहुत सुखद नहीं कहा जा सकता । ब्यक्ति केंद्रित चुनाव का सम्पन्न होना जहां लोकसभा के चुनाव में प्रत्याशी लगभग अप्रासंगिक रहा और प्रत्येक सीट पर मोदी ने स्वयं चुनाव लड़ा, इस प्रकार की परिस्थिति किसी भी संसदीय लोकतंत्र के लिए बहुत प्रेरणास्पद तो नहीं ही कही जा सकती। सैद्धान्तिक रूप से संसदीय लोकतंत्र में कार्यपालिका को नियंत्रित करने की जिम्मेदारी व्यवस्थापिका पर है परन्तु जो लोकसभा मोदी के नाम पर गठित हो रही है वह अपने इस सैद्धान्तिक दायित्व का निर्वहन कर पायेगी इस पर संशय है।

## चुनाव प्रचार का गिरता स्तर

(दी लाइव टी वी, 14 दिसम्बर 2018)

चुनाव प्रचार जिस घटिया तरीके से संपादित किया गया वह केवल राजनीतिशास्त्री के लिए ही नहीं वरन एक आम भारतीय के लिए भी चिंता का सबब होना चाहिए। पूरे चुनाव अभियान के दौरान पक्ष और विपक्ष दोनो ही तरफ से स्थायी और दीर्घकालिक हित के मुद्दों पर बात नहीं की गयी। ऐसी चीजें मुद्दा बनीं जो नहीं बननी चाहिए थीं । चौकीदार चोर है के नारे रैलियों में लगवाये गये, नामदार, कामदार, विधवा आदि अशोभनीय शब्दों का प्रयोग किया गया, प्रधानमंत्री को थप्पड़ मारने की बात की गयी और तो और स्त्री के अंर्तवस्त्र के रंग जानने तक का प्रयास किया गया। भारत की सेना, विविध संवैधानिक संस्थाओं यथा चुनाव आयोग, सर्वोच्च न्यायालय, पैरामिलिट्री फोर्सेज तक को राजनीति में घसीटने का प्रयास किया गया। हालांकि जनता ने इन सबका जबाब दे दिया है फिरभी ये वो चीजें हैं जिन्हें भारत का लोकतंत्र याद नही करना चाहेगा।

## निष्कर्ष

शोध पत्र में उद्धाटित तथ्यों के निर्वचन से यह स्पष्ट होता है कि आम चुनाव 2019 में भारत की दो प्रकार की राजनीतिक संस्कृतियों के दर्शन हुए हैं। उपरोक्त तथ्य यह प्रमाणित करते हैं कि भारत की जन संस्कृति जहां उर्ध्वमुखी है वहीं भारत की अभिजन संस्कृति अधोमुखी प्रमाणित होती है। जनता का अपनी व्यवस्था से लगातार जुड़ना, राज्य और केन्द्र के निर्वाचनों में अपना स्पष्ट दृष्टिकोण रखना, विश्वसनीय संवाद को स्वीकार करना तथा दिये गये प्रलोभनों में न आना निःसंदेह भारत के जन संस्कृति के उभार को प्रमाणित करता है।

## REFERENCES

*अमर उजाला,* 14 दिसम्बर 2018

आमण्ड, गेब्रियल ए एण्ड वर्बा सिडनी (1965): *सिविक कल्चर,* बोस्टन, एमए, लिटिल ब्राउन एण्ड कंपनी

आरोनआफ, माईरान जे0 (2002) *पॉलिटिकल कल्चर* इन इन्टरनेशनल इनसाइक्लोपीडिया आफदी सोशल एण्ड विहैवियरल साइंसेज, नील जे स्माल्सर एण्ड पाल बी बाल्ट्ज (एडि) आक्सफोर्ड,एल्जेवियर,11640

एक्जेलराड, रावर्ट 1997 दी डाइमेंसन आफ कल्चरः ए मॉडल विथ लोकल कवरेजेन्स एण्ड ग्लोबल पोलराइजेशन, *जर्नल ऑफ कान्फिलक्ट रिजोलूशन,* **(41)** 203–26

ब्राजीलाई गैड (2003) *कम्यूनिटीज एण्ड लाः पॉलिटिक्स एण्ड कल्चर्स आफ लीगल आइडेन्टिटीज,* एन आर्बर, यूनिवर्सिटी आफ मिशीगन प्रेस

डाइमण्ड लैरी (एडि0) *पॉलिटिकल कल्चर एण्ड डिमाक्रेसी इन डेवलपिंग कन्ट्रीज,* यूएसए, लिनी रिनर

https://eci.gov.in/

https://en.wikipedia.org/wiki/2019_Indian_general_election